दिनांक 1 जुलाई, 1985

सं श्रो वि श्रम्बाला 27370. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) हरियाणा राज्य परिवहन, यमुनानगर, के श्रमिक श्री योगराज तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) दारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रत्रन्धकों तथा श्रियक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री योग राज की सेवाश्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 4 जुलाई, 1985

स. भ्रो.वि./एउ.भ्रो.वी./99-85/27760 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में एस० कै० रवड़ (महाबीर रवड़), प्लाट नै० 86, सैक्टर-24, फरीदावाद, के श्रमिक श्री राम श्रीत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भ्रोद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिस्चना सं. 5415-3-श्रम-/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिस्चना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राम श्रीत की सेवाग्नों का समा न न्यायोचित तथा ठीक है यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि । प्रमुनानगर | 49-83 | 27767 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है, कि मैं हिरियाणा स्टेट इण्डस्ट्रीज डिवेंलपमैंट कारपोरेशन लि , यमुनानगर, के श्रमिक श्री सुरेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है ;

भौर चृ कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, मब, मीद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं०3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त मिधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, मम्बाला को विवादमस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामल। न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादमस्त मामना है या विवाद से सुसंगत प्रयश सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सुरेश कुमार की सेवांग्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 9 जुलाई, 1985

संश्रो विव / ग्रम्बाला / 34-65 / 28458 --- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डागढ़ (2) जनरल मैंनेजर, हरियाणा रोड़वेज, कैथल के श्रमिक श्री चरणजीत लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसलिए, प्रव यौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला, को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्यां श्री चरणजीत लाल की सेवायों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं शो वि | अम्बाला | 28-85 | 28517 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयक्त, हरियाणा, चण्डीगढ, (2) हरियाणा राज्य परिवहन, यमुनानगर, के श्रमिक श्री रणबीर सिंह, कारपैंटर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचीगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधमूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच यातो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री रणधीर सिंह कारपैंटर की सेवाओं का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ० श्रो ० वि ० श्रम्बाला / 38-85 / 28524 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, कैथल, (2) परित्रहन प्रायुक्त, हरियाणा, च्रम्डोगढ़, के श्रामिक श्री अत्याल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियोणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्वना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादअस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या.श्री सतपाल सिंह की सेवाग्रों का समाधान न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ओ वि । अन्वाला । 80-85 | 28531. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. कीर्ती टाईप फाऊन्डरी द्वारा बी रुएम रुमधीक भीर्ती मैन रुट्रेडिंग ह उस नजदाक जी रुपम रुपन कालेज, अम्बाला कैंट के श्रमिक श्री जय प्रकाण शर्मा तथा उसके श्रवन्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है: —

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए अब औद्योगिक विशाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गृटित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री जय प्रकाश शर्मा की सेवास्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?